BA Part - II

History Notes

By - Dr. Durga Bhawani

Scanned with CamScanner

B.A Part II History Hons and Subsi
(For Hons Paper III only)

Q. तैमूर के भारत पर आक्रमण के कारण एवं परिणाम का वर्णन करें।

Ans: अमीर तैमूर या तिमूर का जन्म 1336 ई० में मध्य एशिया के कैच नामक स्थान में हुआ था, जो समरकंद से 50 मील दक्षिण में था। तैमूर के पिता अमीर तुर्गाई बरलास जाति की एक शाखा गुर्गा या चुगताई के प्रमुख थे। 1369 ई० में पिता की मृत्यु के बाद तैमूर चुगताई शाखा का प्रमुख बना और समरकंद के सिंहासन पर बैठा। तैमूर महत्त्वाकांक्षी एवं साहसी व्यक्ति था। उसने ईरान, अफगानिस्तान, एशिया, सीरिया, कुर्दिस्तान, एशिया माइनर, बगदाद और जार्जिया को जीत कर एक विशाल साम्राज्य की स्थापना कर ली। तैमूर ने लूट-पाट, अग्नि-कांड तथा कत्लेआम के माध्यम से इन सारे क्षेत्रों में आतंक फैला रखा था। वह एक महान सेनापति था और युद्ध में एक पैर जख्मी हो जाने के कारण उसका नाम तैमूर लंग हो गया। वह भारत पर आक्रमण करने के बाद चीन पर अधिकार करना चाहता था परन्तु रास्ते में 1405 ई० में उसकी मृत्यु हो गई। मरने के पहले वह एक विशाल साम्राज्य का स्वामी हो चुका था।

भारत पर आक्रमण के कारण — तैमूर महमूद गजनवी की तरह ही एक लुटेरा था। उसने धन प्राप्त करने के उद्देश्य से भारत पर आक्रमण किया था, परन्तु अपनी आत्म-कथा में उसने भारत पर आक्रमण करने का कारण — काफिरों को नष्ट करना, मुहम्मद के आदेशों को भारत में प्रचार करना, मंदिर एवं मुर्तियों को नष्ट कर खुदा की नजर में 'गाजी' एवं 'मुजाहिद' बन जाना लिखा था।

वह भारत को अपने साम्राज्य में सम्मिलित करना चाहता था या मात्र सम्पत्ति प्राप्त करना चाहता था — स्पष्ट रूप से उल्लेख नहीं मिलता है। लेकिन इतना कहा जा सकता है कि इतना जोखिम उठाकर राज्यों को

myCompanion

Scanned with CamScanner

जीतने तथा धन प्राप्त करने के लिए तैमूर ने भारत पर आक्रमण किया था। भारत विजय की योजना उसके मन में पहले से थी जिसकी पृष्ठभूमि उसने तैयार कर ली थी।

तैमूर ने अपने पौत्र पीर मुहम्मद को भारत आक्रमण करने के लिए भेजा। पीर मुहम्मद ने एक विशाल सेना के साथ सिंधु नदी को पारकर उच्च और मुल्तान पर डेरा डाल दिया। उस समय मुल्तान सारंग खाँ के अधिकार में था। पीर मुहम्मद ने सारंग खाँ को तैमूर की अधीनता स्वीकार करने का संदेश भेजा लेकिन सारंग खाँ ने पीर मुहम्मद को युद्ध के लिए ललकारा और छह महीने की घेरा बन्दी के बाद पीर मुहम्मद ने उच्च और मुल्तान पर अधिकार कर लिया। पीर मुहम्मद ने दीपालपुर और पाकपट्टन के क्षेत्रों पर अधिकार कर, उसे एक अफगान सरदार मुसाफिर काबुली के हाथों में सौंप दिया किन्तु दीपालपुर की जनता ने मुसाफिर काबुली की हत्या कर दी और सूचना पाकर ~~पीर मुहम्मद के~~ तैमूर ने स्वयं भारत पर आक्रमण करने का निर्णय लिया और अप्रैल 1398 ई० में एक विशाल सेना के साथ भारत की ओर प्रस्थान किया।

तैमूर ने समरकंद छोड़ने के बाद शहर में अनेक दुर्गों का निर्माण किया और यातायात का संबंध समरकंद से स्थापित कर वह अगस्त 1398 ई० में काबुल पहुँचा। 24 सितम्बर 1398 ई० को उसने सिंधु नदी को पार किया। इससमय सिंध का शासक शहाबुद्दीन मुबारक था उसने इसका विरोध किया किन्तु शहाबुद्दीन और उसकी सेना झेलम में मारी गई और तैमूर झेलम नदी को पार कर तलम्बा नामक नगर पहुँचा और नगर को नष्ट करने का आदेश दिया। उसने नगर वासियों को धन इकट्ठा करने पर अभयदान का वचन दिया किन्तु धन प्राप्त करने के बाद उसने जनता को कत्लेआम कर डाला।

Scanned with CamScanner

तैमूर ने लाहौर के शासक जसरथ को हरा कर सतलज नदी के उत्तरी किनारे पर पीर मुहम्मद से जा मिला। अब तैमूर ने उत्तर की ओर से तथा पीर मुहम्मद ने दक्षिण की ओर से भारतीय अभियान का संचालन किया।

पाकपट्टन और दीपालपुर की विद्रोही जनता का संहारकर तैमूर ने भटनेर के शासक दुलचीन पर आक्रमण किया क्योंकि दुलचीन ने विद्रोहियों को शरण दी थी। तैमूर ने दुलचीन को पराजित किया और दीपालपुर के छिपे हुए विद्रोहियों को मारकर भटनेर दुर्ग पर अधिकार कर लिया।

भटनेर विजय के बाद तैमूर तेजी से दिल्ली की ओर बढ़ा और रास्ते में पंजाब के 2000 जाटों का वध करते हुए सिरसा, फतेहाबाद, समाना, पानीपत आदि नगरों को लूटता एवं नष्ट करता हुआ दिल्ली पहुंच गया।

7 दिसम्बर 1398 ई० को तैमूर की सेना ने यमुना नदी को पार किया और लोनी पर अधिकार कर लिया तथा लोनी की हिन्दू जनता का अकारण ही वध कर दिया। इस प्रकार रास्ते में हजारों निर्दोष व्यक्तियों की हत्या तथा लूट से आतंक छा गया था। अब तक तैमूर ने लगभग 1 लाख हिन्दुओं को बन्दी बना लिया था। लोनी के हिन्दुओं के त्याग एवं बलिदान से बंदियों में खुशी छा गई उसके इस भाव को देख कर तैमूर ने सभी बंदियों की हत्या करवा दी।

दिल्ली का सुल्तान नासिरुद्दीन महमूद शाह अपने मंत्री मल्लू इकबाल के हाथों का खिलौना था परन्तु तैमूर के आक्रमण के समय उसने साहस से काम लिया। 17 दिसम्बर 1398 ई० को युद्ध शुरू हो गया। सुल्तान महमूद शाह और मल्लू इकबाल की सेना में वीरता का अभाव नहीं था किन्तु अंत में वे पराजित होकर भाग गए। दिल्ली पर तैमूर का अधिकार हो गया। सय्यदों, काजियों,

शेखों और उलेमाओं ने तैमूर का स्वागत किया। शासक के अभाव में सेना तितर-बितर हो गई और जनता असहाय पशुओं की तरह तैमूर के अत्याचार का शिकार बन गई। 15 दिनों तक तैमूर और उसकी सेना दिल्ली में रहे और प्रतिदिन लूटपाट, आगजनी और हत्या की घटना घटती रही। सीरी, पुरानी दिल्ली और जहाँपनाह तीनों नगर नष्ट कर दिए।

तैमूर ने स्वयं इस बात को स्वीकार किया है कि सय्यदों और मुलतानों को छोड़कर शेष सभी निवासियों की लूट और हत्या कर दी गई थी तथा उसके लिए दिल्ली के नागरिक स्वयं जिम्मेदार थे। कई हजार व्यक्तियों को दास बनाकर भागों के बीच बाँट दिया गया और अनेक कुशल कारीगरों को समरकंद में मस्जिद बनाने के लिए भेज दिया गया।

दिल्ली को नष्ट करने के बाद तैमूर मेरठ गया। मेरठ की रक्षा इलियास अफगान और उसके पुत्र अहमद यानेसरी और सफी वीरता से कर रहे थे। तैमूर ने मेरठ दुर्ग को ध्वस्त कर पूरे नगर को नष्ट कर डाला।

मेरठ के बाद तैमूर हरिद्वार की ओर बढ़ा। यहाँ के हिन्दुओं ने तैमूर का विरोध किया। हिन्दू सेनाओं को पराजित कर तैमूर ने कांगड़ा पर अधिकार कर लिया। तैमूर ने जम्मू के शासक को इस्लाम धर्म स्वीकारने के लिए विवश किया। कश्मीर के शासक सिकन्दर शाह ने तैमूर की अधीनता स्वीकार कर ली।

इस प्रकार भारत के अनेक भागों को रौंदता हुआ तैमूर समरकंद की ओर लौटने का निर्णय लिया। लौटने से पहले उसने खिज्र खाँ को लाहौर, दीपालपुर और मुलतान का शासक नियुक्त किया। 19 मार्च 1399 ई० को तैमूर सिंधु नदी को पार कर बन्नू के रास्ते समरकन्द की ओर प्रस्थान किया और कुछ ही दिनों के बाद अपनी राजधानी पहुँच गया।

तैमूर के आक्रमण का प्रभाव— तैमूर का आक्रमण भारतीय इतिहास में एक प्रचंड आँन्धी की तरह था जिसकी चपेट में पड़ने वाले सभी क्षेत्र तहस-नहस हो गए। एक इतिहासकार ने लिखा है कि— "Timur had inflicted on India more misery then had ever before been inflicted by any conqueror in a single invasion." अर्थात भारत को जितनी क्षति और दुख तैमूर के एक आक्रमण ने पहुँचाया है, पहले किसी आक्रमण ने नहीं पहुँचाया था। तैमूर के आक्रमण से भारत को अवर्णनीय क्षति हुई तथा भारतीय राजनीति में अव्यवस्था तथा अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो गई और दिल्ली वीरान हो गई। कत्ले आम से बचे खुचे व्यक्ति अकाल एवं महामारी की चपेट में आ गए। खेतों में लगी फसलें नष्ट कर दी गई तथा गाँव एवं नगर को जला दिया गया। आतंक और भय के कारण बसी-बसाई आबादी भाग गई। कत्ले आम और लूट के बाद अपार सम्पत्ति तैमूर के हाथ लगी। दिल्ली स्वामीहीन हो गया तथा नगर में मौत का सन्नाटा छा गया।

तुगलक साम्राज्य के लिए तैमूर का आक्रमण अत्यंत घातक साबित हुआ। तुगलकों की सत्ता मात्र दिल्ली के आस-पास के क्षेत्र तक सीमित रह गई। बंगाल स्वतंत्र हो गया। जौनपुर में ख्वाजा जहाँ ने एक स्वतंत्र राजवंश की स्थापना कर ली। गुजरात मुजफ्फर शाह के अधीन स्वतंत्र हो गया। मालवा में दिलावर खां, पंजाब और सिन्ध में खिज्र खां, समाना में गालिब खां, कालपी और महोबा में मुहम्मद खाँ स्वतंत्रता की घोषणा कर दिल्ली सल्तनत से अलग हो गए। दक्षिण के राज्य फिरोज के समय ही स्वतंत्र हो चुके थे। विघटनकारी तत्वों के कारण अनेक छोटे-छोटे राज्य की स्थापना की गई।

दिल्ली सलतनत की प्रतिष्ठा इस्लामी संसार

में गिर गई और उसका विनाश एक ऐसे आदमी के हाथों से हुआ जो अपने को इस्लाम धर्म का शिरोमणि मानता था। इस प्रकार तुगलक साम्राज्य का पतन अवश्यसंभावी हो गया और उसके स्थान पर सैय्यद वंश की स्थापना की गई।

तैमूर के आक्रमण ने मुसलमानों के प्रति हिन्दुओं के मन में घृणा पैदा कर दिया क्यों कि तैमूर के अत्याचार का शिकार अधिकतर हिन्दु ही हुए थे। उसने शेखों और उलेमाओं आदि को तंग नहीं किया था किन्तु काफिरों की हत्या करना वह अपना धार्मिक कर्तव्य मानता था। लाखों हिन्दुओं की हत्या की गई और तथा दास और बन्दी भी बनाया उसने मंदिरों और मूर्तियों को नष्ट कर दिया। धर्म की रक्षा के नाम पर अनेक हिन्दु स्वयं अपने घरों में सपरिवार जल कर मर गए। तैमूर की संहारक नीति ने भारत में हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच भेदभाव की खाई को गहरा बना दिया और दोनों सम्प्रदायों के बीच समन्वय कायम नहीं हो सका।

तैमूर के आक्रमण ने भारत की समृद्धि को नष्ट कर दिया। अनेक सुन्दर नगर जला दिया और बहुमूल्य कलात्मक वस्तुओं को नष्ट कर डाला।

तैमूर का वंशज बाबर था। तैमूर की भारत-विजय ने आगे चल कर भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना का द्वार खोल दिया। पंजाब और सिंध पर तैमूर द्वारा नियुक्त अधिकारी को बाबर नैतिक एवं कानूनी दृष्टि से अपना पैतृक अधिकारी मानता था दूसरी ओर तैमूर की लूट और अपार धन की प्राप्ति ने मुगल आक्रमणकारियों को भारत में अपना साम्राज्य स्थापित करने की प्रेरणा दी।

उपर्युक्त विवरण के आधार निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि तैमूर के आक्रमण का परिणाम भारतीय इतिहास की दृष्टि से हानिकारक था। राजनैतिक विघटन के फलस्वरूप केन्द्रीय शक्ति का ह्रास हो गया और भारत छोटे छोटे राज्यों में विभक्त हो गया। उनमें आपसी शत्रुता की भावना थी। अतः तुर्कों की तरह मुगलों के लिए भी भारत विजय सरल हो गया।

—— x ——